नैतिकता :

नैतिकता (Ethics) एक ऐसी शाखा है जो सही और गलत, अच्छा और बुरा, न्याय और अन्याय के बीच अंतर करने के सिद्धांतों का अध्ययन करती है। यह मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाले मूल्यों, आदर्शों और आचरण नियमों से जुड़ी होती है।

नैतिकता का मुख्य उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि व्यक्ति, समाज या संस्था को किन नैतिक मानदंडों के अनुसार कार्य करना चाहिए। यह व्यक्तिगत जीवन, पेशेवर व्यवहार, सामाजिक कर्तव्यों और वैश्विक जिम्मेदारियों तक फैली होती है।

नैतिकता का महत्व:

यह व्यक्ति में चरित्र निर्माण करती है।

समाज में विश्वास और सहयोग की भावना को बढ़ाती है।

अनुशासन और न्यायपूर्ण व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक होती है।

ईमानदारी (Honesty):

ईमानदारी एक महान नैतिक गुण है, जो मनुष्य के चरित्र को उज्ज्वल बनाता है। यह सत्य बोलने, अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करने और दूसरों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करने की प्रेरणा देता है। ईमानदार व्यक्ति को समाज में सम्मान मिलता है और वह दूसरों के लिए आदर्श बनता है। यद्यपि ईमानदारी का मार्ग कठिन हो सकता है, परंतु इसका फल हमेशा मीठा होता है। ईमानदारी न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी स्थायित्व और विश्वास की नींव रखती है। अतः हमें सदैव सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चलना चाहिए।

"जो व्यक्ति अपने विचारों, वचनों और कर्मों में समानता रखता है, वही सच्चे अर्थों में ईमानदार कहलाता है।"

बेंजामिन फ्रैंकलिन: usa writer,scientist,states man
"ईमानदारी धन नहीं पैदा करती, लेकिन यह एक बड़ी विरासत ज़रूर छोड़ती है।"

आजीवन शिक्षण (Life Long Learning):

आजीवन शिक्षण का अर्थ है – जीवन के हर चरण में नई चीजें सीखते रहना। यह केवल विद्यालय या महाविद्यालय तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन की प्रत्येक अवस्था में अनुभवों, ज्ञान और कौशल को अर्जित करने की प्रक्रिया है। बदलती दुनिया और तकनीक के इस युग में निरंतर सीखते रहना व्यक्ति को आत्मनिर्भर, सक्षम और अद्यतन बनाए रखता है।

एक आजीवन शिक्षार्थी हमेशा उत्सुक रहता है, और सीखने के प्रति उसका दृष्टिकोण सकारात्मक होता है। चाहे वह पेशेवर जीवन हो, पारिवारिक अनुभव हो या सामाजिक परिवेश – हर जगह से सीखकर जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। यह आदत न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी साबित होती है।

Henry Ford: Ford motor assembly line technic
"Anyone who stops learning is old, whether at twenty or eighty. Anyone who keeps learning stays young."
(जो सीखना बंद कर देता है, वह बूढ़ा हो जाता है – चाहे उसकी उम्र 20 हो या 80। जो लगातार सीखता रहता है, वह हमेशा जवान रहता है।)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temperament):
वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ है – सोचने, समझने और निर्णय लेने में तर्क, प्रमाण और विश्लेषण का उपयोग करना। यह दृष्टिकोण अंधविश्वास, रूढ़ियों और बिना तर्क के विश्वासों से ऊपर उठकर सत्य को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करता है। वैज्ञानिक सोच न केवल विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि दैनिक जीवन, समाज और राष्ट्र निर्माण में भी अत्यंत आवश्यक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने वाला व्यक्ति हर बात को प्रश्न करता है, प्रमाण मांगता है और खुले मन से विचारों को समझता है। वह विचारों को आंख मूंदकर स्वीकार नहीं करता, बल्कि अनुभव, प्रयोग और अध्ययन के आधार पर निर्णय लेता है।

भारत के संविधान का अनुच्छेद 51(ए)(एच) प्रत्येक नागरिक को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और सुधार की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

"Scientific temper is not just a way of thinking, it is a way of life."
(वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल सोचने का तरीका नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज को अंधविश्वास और कूपमंडूकता से मुक्त करता है। यह सोच को तार्किक बनाता है, नवाचार को जन्म देता है और राष्ट्र को प्रगति की दिशा में ले जाता है। हर छात्र, शिक्षक और नागरिक को इस दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए।